Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

नाचिकेतकाव्य का समीक्षण

घनश्यामसिंह एन. गढवी

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

महाकवि हरिराय–आचार्य के द्वारा रचा गया यह लध्वाकार आधुनिक महाकाव्यं है। गौतमगोत्रीय महर्षि वाजश्रवा सर्वदानरुप विश्वजिदाभिधानिक महाक्रतु को सम्पादित करते है। यह महासत्र में याचकों के लि गोदान करते हुए पिता द्वारा कृशकाय, पीतोदक, जग्धतृण, दुग्धदोहा, निरिन्द्राय गायें दी जा रही थीं। तद्दृश्य को देख माँ के पास से जिन्हों ने दानमहिमा सुनी थीं, उस नचिकेता कहा–

क्षुत्क्षामा दुर्बला एताः शुष्कस्तन्यः कृशेन्द्रियाः।

धेनूः प्रयच्छता चैताः किं तातेन विधीयते।। (नाचिकेतकाव्यम् ४–३१)

इस विषय में नचिकेता मुग्धभाव से सर्वस्वदानकाले बोला 'मां कस्मै दास्यति पिता? इति–

सर्वस्वदानयज्ञेऽस्मिन् देयं प्रियतमं धनम्।

मां ते प्रियतमं पुत्रं पितः कस्मै प्रदास्यसि।। (नाचिकेतकाव्यम् ४–५६)

विजिज्ञाया करता हुआ वह पिता को उपुर्यक्त वाक् कहात है। अनायास अनपेक्षित प्रश्न को सुनकर तथा बार बार पूछे जाने से, 'बालोऽयं' विचारते हुए पिता ने कोई भी प्रकार का प्रत्युच्तर नहीं दिया। पुनः पुत्र से इस प्रश्न को पुछे जाने पर उद्वेजित पिता ने 'मृत्यवे त्वां दास्यामी 'ति' आक्रोश में कहा–

मृत्यवे त्वां प्रदास्यामि जाल्म धृष्ट रिपो मम।

याहि मत्सम्मुकात दूरं चुक्रोशेत् आरुणिः कृधा।। (नाचिकेतकाव्यम् ४–५८)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

नचिकेता सशिरसा प्रणाम करता, पितुर्वचन को प्रधारण करते हुए, उसकी आज्ञा को पार लगाने यमसदन प्रति प्रयाण करता है। बालक सतनुर्मन्त्रबल से सत्वर यमलोक को पहुंचता करता है। जिस काल प्रवेश से निवारित हुआ उसी काल से नचिकेता नक्तत्रय उस स्थान पर हीवास रकता है। स्वपत्र्यभिप्रेरित जिस काल शीघ्रता से आरुणिपुत्र के आतित्य के लिए गये यम समागत हुए। साक्षात्वहिनरुपातिथि के लिए वरत्रय मांगने को कहा और देने को प्रतिबद्ध हुए, यथा–

अर्धं पाद्यं दत्वा वटुकं ह्युच्चासने च संस्थाप्य।

सनृतावाचा तस्य नतशीर्ष स्वागतं चक्रे। (नाचिकेतकाव्यम् ५–७)

यम सत्वर कहते है वटुक–

अनन् गृहद्वारि नक्तत्रयं भोरवासीर्नमस्यातिथे ब्रह्मरुप।

अतः प्रार्थये त्वामहं स्वस्तिकामो यथाभीप्सितो स्त्रीन् वरांस्त्वं वृणीस्व।। (नाटिकेतकाव्यम् ५–१६)

मेरे कोपान्मुखोद्वान्तकटूक्तिबद्धपरितापखिन्नपूज्यपिता का मृत्यु परिशान्त हो ऐसा प्रथम वर मुजको प्रदान करें। यमराज ने कहा 'तथास्तुन, इति वचन से एक वर प्रदत्त हुआ। नतस्मतक प्रणाम करके यम को, कुमार ने कृतज्ञभाव निवेदित कर जल्दी से बोला, हे देव आपकी आज्ञा से मैं द्वितीयेष्ट वर का वरण करुँगा।

द्वितीय वर की याचना करत वटुक अगिनचयनविद्या के विषय में सश्रद्ध विचित्तसा करता है। विविध–ज्यामितीयाकाररचित वेदिकाओं में समिधादिहव्यपदार्थो से प्रज्वलित यज्ञाग्नि में भिन्न–भिन्नदेवताओं के लिए समन्त्राहूतियाँ प्रदत्त होती है, उनका क्या रहस्य है? यह नचिकेता के प्रश्न के समाधान हेतु मृत्युदेव उनके लिए अग्निचयनविद्यामाध्यम से मानवजीवन के रहस्य

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

को उद्घाटित करते हैं। वस्तुतस्तु यह मानवतनुं शाश्वतवेदिका, उस में समाहित प्राण ही अग्निरुप, बुद्धिमान त्रिकाल में यजन करात हुआ स्वीयेष्ट देवों के लिए हविप्रदान करता हुआ, स्वर्ग्य जीवनसयज्ञ को सम्पादित करता, मृत्यु के पूर्व ही, मृत्युपाश से मुक्त होकर, शोकातिग होता हुआ, स्वर्ग में आमोद प्राप्त करता है । ऐसे ही संपूर्ण मानव जीवनावधि में आश्रमचतुष्टय के वारत्रय आगम्यमान त्रिसन्धियों में अग्निचनय करके यह यजन किया जा सकता है। जिस से पुनर्जीवन असम्भव बनता है। नचिकेता बालक होने के बावजूद भी यम के मुख से यह वचन सुनकर त्वरा, से यथावत्स्वप्रखरबुद्धि से पुनर्निवेध मृत्युदेव को मुग्ध करता है। वह बोलता है कि

कुशाग्रबुध्ध्या वटुकस्य तुष्टस्तस्मै ददौ दुर्लभदिव्यमालाम्।

प्रीतः पुनः प्राह वरं ददामि तवैव नाम्ना भविताऽयमग्निः।। (नाचिकेतकाव्यम् ५-४०)

यह सुन यम के मुख जो पाता है वह त्रिचिणाग्निरुप से प्रसिद्ध हुआ।

तृतीयं वरं वृणीष्व इति-यम का आदेश सुन के नचिकेता शाश्वत और दार्शनिक यह प्रश्न को पुछ बैटा 'हे मृत्युदेव केचिद्वदन्ति यन्मृतेऽपि मनुष्ये वर्ततेऽस्तित्वम्, अन्ये वदन्ति न विद्यत इति'- सकैसी यह विचिकित्सा क्या उनका कोई समाधान हैय श्रीमत आप के श्रीमुख से मैं सुनना चाहता हूँ। शिशुमुख से यह अप्रत्याशित तथा गूढ संशय को समाकर्ण्य विस्मय से विमुढ हुए नरकाधिपति। मरणहस्य प्रस्न को निवारणार्थ यम ने नचिकेता को विपुल धनवैभवपुत्रपौत्रादि सांसारिकसुखों का प्रलोभन प्रस्तावित किया। यथा-

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

त्वमपि चिरायुर्भूत्वा भुक्ष्ड्व रमणीयानां शतं रमणीः।

स्वच्छन्दं भज भूमौ काम्यान्कामान् यथाकामम्।।

हठयोगि अरुणिपुत्र से नश्वरपदार्थो की अस्वीकृति हुई, मात्र स्वीय प्रश्न के समाधान को ही वर तृतीय रुप में मांगा। उसकाल पात्र को जान, उनकी श्रद्धा को देक, जिज्ञासा का समीक्षण कर, तीव्र प्रज्ञा की विचिन्ता करके यमराज ने उनको आत्मविद्या, जो देवतां के द्वारा भी अज्ञात, गूढनतत्त्व है उनका उपदेश किया। यह एव नाचिकेतकाव्य का प्रमुख उद्बोध है।

यम नचिकेता को कहते है, पञ्चमहाभूतों से निर्मित, जननीजठर से संजात यह मानवदेह जड होता हुआ, काल से विनाश को प्राप्त होता है। जिसका जन्म उनका विनाश- यह ध्रुव विधान विधि ने निर्माण किया है। आत्मविषयक यह दिव्य नचिकेत- यमराज का परम, अद्भूत संवाद है। महतो महीयान् यह आत्मा अज, नित्य, शाश्वत और पुराण है। सूर्यन्चद्रादिग्रहातिक्रान्त यह दिव्य प्रकाश और उनसे भासित यह सर्वं चराचर जगत प्रकाशित है। इनके चेतन्यस्फुरण से यह लोक का जनन, जीवन होता है. हृदयगुहा में निगूढ यह जिसकाल जीर्णशरीर से मुक्त होता हुआ प्रयाण करता है उस काल-

एको भूत्वा किमर्थं सः नैकरुपेषु भासते।

अद्वितीयं कथं द्वैतं भजते जीवयोनिषु।। (नाचिकेतकाव्यम् ७-२०)

आत्मा रथरुप यह शरीर में रथीव विराजमान होात है, बुद्धि उनकी सारथि, मन प्रग्रह, इन्द्रियाँ तत्पराङ्गमुख स्वविषयानुधाविन तुरङ्ग इव वर्णित है महाकवि से-

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

आत्मा रथी तस्य रथं शरीरं बुद्धिः स्थिता सारथिरुपेण।

वल्गा मनोऽश्वाः सकलेन्द्रियाणिधावन्ति मार्गे विषयोन्मुखानि।। (नाचिकेतकाव्यम् ७-३८)

जीव परमात्मा के दर्शन का ईच्छुक, अविधावृत्त इस देह में जीवनयापन करता है यथा चतुभीरुपकक्रमों से-

असौ हंसौ वसुर्होता चतुर्थोतिथिन्रुपकः। (नाचिकेतकाव्यम् ७-४१)

जीवन में पंथ दो है, श्रेय और प्रेय हरिराम आचार्य ने कहा कि-

द्वौ पन्थानौ श्रेयसः प्रेयसश्च भिन्नावेतौ लोकमाकर्षतश्च।

नश्वरेषु रतिं कुर्वन् जनः भवचक्रे पतति।। (नाचिकेतकाव्यम् ६-२८)

आत्मतत्त्वजिज्ञासु जीवनकाल में ही साक्षात्कार करके भवबन्धविमुक्त होता हुआ, मोक्ष को प्राप्त करता है और वह ही विरल है। उस मार्ग प्रति सर्वातीत, तत्त्वभूत यह आत्मा 'ओमत्येकाक्षरब्रह्मैव' को कठोपनिषद् विवरण करता है कि-

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेघया न बहूना श्रुतेन।

यमैवेष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तन् स्वाम्।। (क.उ. १-२-२३)

तथापि आत्मा को प्राप्त करने का प्रयास करना ही चाहिए, जिससे अविधावरण का छेदन परम समीप को लाता है । भो ऋषिकुमार देवताओं से भी यह आत्मा अमेय होता हुआ, देह में निर्लिप्ततया वसता है। यथा-

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सः भासते निश्चलशुद्धिमानसे विद्योतते निर्मलुबद्धिदर्पणे।

स ज्योतिषा केन बत प्रकाशितः यस्यैव भासाभुवनं विभात्यसौ।। (नाचिकेतकाव्यम् ७-६०)

श्रेयोऽभिलाषी परमात्मा को तत्त्वतः जीवनकाल में ही जानने को समर्थ होता है। वह मृत्युपाश से छुटता हुआ, जीवनमुक्त संज्ञा को प्राप्त करता है। कवि ने सम्यक् लिखा है-

उत्तिष्ठ वत्स त्यज मोहनिद्रां प्राप्तो वरः साधय तं स्वदेहे।

ज्ञातं रहस्यं त्वयका हि मृत्योरनावृत्ता द्वास्तव मोक्षधाम्नः।।(नाचिकेतकाव्यम् ७-७६)

तुं यह आत्मविद्या का प्रथम जिज्ञासु होता हुआ, रामधिगतबहनज्ञनालोकविमुक्तभवबन्धशोक होकर जा।

काव्यावलोकनः-

कथावस्तु प्रबोधकर, हृदयवर्जक, चेतःप्रसादनकारि और कठोपनिषदचिन्तयुत प्रबन्धकाव्य का है। कठोपनिषद्कार ने १२१ मन्त्रों में जो दर्शन करवाया है उनमें निगूढ आत्मविद्यास्वरुप, अग्निचयनविद्या का तत्त्वचिन्तन, जीवात्मा की मरणोत्तरयात्रा का रहस्य और जीवनमुक्तिसाधनभूत अमृतत्त्व को यमलोकाधिपति के मुख से प्रकट हुआ।

सप्तसर्गीय यह काव्य ३६८ पद्यों में विस्तृत है। प्रत्येक सर्ग में १-४३,२-१७,३-३१,४-७८,५-४६,६-३३,७-१११ कथानुसार पद्यसंख्या है। बन्धव्यवस्था में पारम्परिकसंस्कृतच्छन्द्र प्रयुक्त हुए हैं, यथा अनुष्टुभस-

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

गृहीणिगृहपर्याया अर्चेवाश्रमपावनी।

केन्द्रं कुटुम्बवृत्तानां कीर्तिर्गुरुकुलस्य च।। (नाचिकेतकाव्यम् १-३४)

कवि ने अन्य में वसन्ततिलका ६-२ इन्द्रवज्रा ६-४ तोटक, ४-२१, स्वग्धरा १-४३, शिखरीणि २-१५, दोहा-चौपाई, सर्ग-२, नवीन छन्द रोला सर्ग-७ इति वृत्तों का दर्शन करवाया है। 'नाचिकेतकाव्यम्' शीर्षक आरुणिपुत्र नचिकेता को आधार कर के, महाकाव्य को ग्रथित किया गया है। यमनचिकेतासंवादरुप कथा प्रख्यात है, प्रारंभ आश्रमवर्णन से हुआ-

अथाऽऽसीदुत्तराखण्डे धनाच्छादिकानने।

गौरीगुरोः पादप्रान्ते वाजश्रवस आश्रमः।। (नाचिकेतकाव्यम् १-१)

यह शिवस्तान पवित्र है, इस स्था न में मड़ल ही प्रवर्तित होता है। और भी विचित्र वर्णन है ।

कवि के द्वारा ऋषिराश्रमसभूत तपोवन, गुरुकुलशिक्षापद्धति, यज्ञसंस्था, दानचर्या, सद्धर्माचरण, प्रकृतिसेवन आदि भारतीय संस्कृति यथाप्रसङ्ग गुम्फित किया है। यथा-

पश्य नैसर्गिकींसृष्टिं नदीमेघद्रुमादिकीम्।

कतं तैरर्जितां सम्पद् औदार्येण वितीर्यते।। (नाचिकेतकाव्यम् ३-९)

काव्य से जिस से आधुनिक चाकचिक्यप्रधानयुग में, संस्कृतिमूल्य दूषितकाल में चिरसञ्चित श्रेयस्कर मानवीयमूल्यों का ज्ञान होता है। नचिकेता नायक है, जो लउदात्तनायक कहा जायेगा। शैलीदृशा विपुल भारतीयवाङ्मयीय सास्त्रकाव्येतिहासपुराणो

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

की तरह संवादशैली में लिखा गया है। यथा–

नचिकेता

मायाजवनिकां छित्वा छायारुपं विहाय च।

परमात्मा कथं ज्ञेयस्तमुपायं वद प्रभो। (नाचिकेतकाव्यम् ७–३३)

यमः

न चर्मचक्षुसा प्रऽेयो नायं प्रत्यक्षगोचरः।

सर्वभूतान्तरात्मानं को हि विज्ञातुमर्हति।। (नाचिकेतकाव्यम् ७–३६)

काव्य में सान्तरस का प्रामुख्य है, अलङ्कारों में उपमारुपकविशेषोक्तिर्विभावनादि का प्रयोग अर्तानुसार कवि के द्वारा प्रयुक्त हु हैं। अहं त्वां मृत्यवे ददामी वति' सुन के सर्व जडीभूत हुआ, यथा–

पवनः स्तम्भितो व्योम्नि जडीभूता भवन्नदी।

अनभ्रवज्रपातेन भूमिकम्प इवोत्थितः। (नाचिकेतकाव्यम् ४–६०)

रसभावभरित, मोक्षपुरुषार्थं को लक्ष्यीकृत्य यह काव्य कवि का नचिकेतायमसंवाद का काव्यानुवादरुप से प्रथम प्रबन्ध काव्य रचना है।